विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

समाज से समाप्त होता सार्वजनिक संवाद

हाल ही में आयोजित 20 सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बहुत ही अच्छी बात कही कि भारत में लोकतंत्र की स्थापना 1947 में इसकी स्वतंत्रता के बाद ही नहीं हुई अपितु यहाँ तो हजारों वर्षों से लोकतन्त्र रहा है। स्वस्थ विचारों की तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति और परस्पर संवाद, जिसे पहले शास्त्रार्थ कहा जाता था, उसकी हमारे यहां पर समृद्ध परंपरा रही है। याज्ञवल्क्य- मैत्रेयी और शंकराचार्य- मंडन मिश्र के शास्त्रार्थ तो अविस्मरणीय थे।

आधुनिक लोकतंत्र में भी संवाद के सिद्धांतों को अंगीकार किया गया है। मनुष्य के सोचने की शक्ति सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है और इसीलिए वह प्रत्येक विषय पर कई प्रकार के विचार रख सकता है। इनमें से कई विचार विरोधाभासी भी हो सकते हैं। अपने-अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता ही स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है।

स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न महापुरुषों में भी, कई विषयों पर विचार वैभिन्य रहा है, किंतु सभी ने एक-दूसरे के विचारों का सम्मान किया है। उदाहरण के लिए रविंद्र नाथ टैगोर और महात्मा गांधी को ही लें। दोनों में अनेक विषयों पर नितांत असहमति थी पर इससे उनके वैयक्तिक सबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। टैगोर जहां एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि थे और पूरी मानवता को एक दृष्टि से देखते थे वहीं गांधी, स्वतंत्रता आंदोलन के नायक थे। वे राष्ट्रवादी थे और उनका उद्देश्य जनता को संगठित कर देश को अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त कराना था। गांधी और टैगोर के विचारों में किसी भी विषय पर दृष्टिकोण में कई घोर असमानता होती थी जिसे वह समय-समय पर व्यक्त भी करते रहते थे। इसके लिए टैगोर नियमित रूप से लेख लिखते थे जिन पर गाँधी जी अपनी आलोचनात्मक टिप्पणी से उन्हें अवगत कराते थे।

हाल ही में राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक व्याख्यान में अशोका विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर रुद्राक्ष मुखर्जी ने बहुत सुंदर तरीके से गांधी और टैगोर के सार्वजनिक संवाद के बारे में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने यह बताया कि किस प्रकार दोनों, अनुशासन को आवश्यक मानते हुए भी, अनुशासन को लाने का तरीका अलग-अलग मानते थे। गांधी जहां इसके लिए नियम और निर्देश की बात करते थे ,वहीं टैगोर का मानना था कि किसी भी व्यक्ति को अपने अंदर से अनुशासन उत्पन्न करने की आवश्यकता है और बाहर से थोपा गया अनुशासन उनके अनुसार सही नहीं था। इसका अनुभव उन्हें तब हुआ जब महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे तो वहाँ की फिनिक्स समिति के विद्यार्थियों को उन्होंने टैगोर द्वारा संचालित शांति निकेतन में पढ़ने हेतु भेज दिया। गांधी जब यहां आए और उन्होंने यह देखा कि अलग-अलग जाति के बच्चे, अलग-अलग पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं तथा बर्तन साफ करने और शौचालय की सफाई के लिए अलग कर्मचारी रखे हुए हैं, तो उन्हें यह बात पसंद नहीं आई। उन्होंने इसके लिए टैगोर को कहा कि आप क्यों नहीं इसके लिए नियम बनाते हैं कि विद्यार्थी अपना सारा काम स्वयं करें। टैगोर ने उन्हें उत्तर दिया कि वे विद्यार्थियों से बात करें और उन्हें इसके लिए प्रेरित करें, यदि वह ऐसा करने के लिए राजी हो जाते हैं तो उन्हें इस पर कोई आपत्ति नहीं होगी किंतु इसके लिए वह कोई निर्देश जारी करता उचित नहीं समझते। गांधी और टैगोर के अहिंसा के बारे में भी काफी अलग-अलग विचार थे। टैगोर और गांधी दोनों एक-दूसरे को पत्र लिखा करते थे और उस पत्र में यह भी लिख देते थे कि वह इस पत्र को सार्वजनिक रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

वर्तमान में क्या यह संभव है कि किसी एक विचारधारा का जनप्रतिनिधि दूसरे विचारधारा के प्रतिनिधि को कोई विरोधी बात लिखे और फिर भी दोनों के बीच में किसी प्रकार की कटुता न हो? सोचिए, क्या प्रधानमंत्री मोदी और विपक्ष के नेता राहुल गांधी में कुछ इस प्रकार का संवाद सम्भव है?आज प्रतिक्रिया, किसी भी व्यक्ति द्वारा व्यक्त किए गए विचार के बारे में न होकर, जिस व्यक्ति ने यह बात कही है, उस पर आक्रमण के रूप में अधिक होती है। यही प्रवृत्ति समाज में स्वस्थ संवाद को बहुत हानि पहुंचाती है। भारत जैसे विविधता पूर्ण देश में, स्वाभाविक है रहन-सहन, खान-पान, बोली-चाली, रीति-रिवाज आदि कई प्रकार के हैं। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक उत्सव मनाने के तरीके भी अलग-अलग हैं, जो एक-दूसरे में विवाद तक उत्पन्न करने की संभावना रखते हैं। आज कोई व्यक्ति लेख, साक्षात्कार, व्याख्यान, कार्टून आदि के माध्यम से अपने विचार अभिव्यक्त करता है तो तत्काल ही विपक्षी विचारधारा के व्यक्ति, संबंधित विषय पर अपनी बात कहने के स्थान पर, जिस व्यक्ति ने बात कही है, उसी को ट्रोल करना प्रारंभ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि कई व्यक्ति चाहते हुए भी अपनी बात को अपने तक ही सीमित रखते हैं और उसे सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। सरकार का अधिक दायित्व होता है कि वह विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकार की सुरक्षा करे।

> **स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न महापुरुषों में भी, कई विषयों पर विचार वैभिन्य रहा है, किंतु सभी ने एक-दूसरे के विचारों का सम्मान किया है। उदाहरण के लिए रविंद्र नाथ टैगोर और महात्मा गांधी को ही लें। दोनों में अनेक विषयों पर नितांत असहमति थी पर इससे उनके वैयक्तिक सबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।**

दुर्भाग्य से संवाद के लिए सार्वजनिक स्थान, धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है और मानव की प्रवृत्ति भी उदारवादी होने के स्थान पर संकुचित होती जा रही है। अपने विश्वास और अपने विचार के प्रति आस्था रखना अलग बात है, किंतु दूसरे व्यक्ति के विचार और उसकी आस्था को कमतर करके आंकना अलग बात है।

टैगोर और गांधी लगभग एक ही काल खंड में हुए थे। उन्होंने संवाद में जहां एक-दूसरे के ठीक विपरीत अपने विचार रखे थे किंतु इसके बावजूद, दोनों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं आई।

यहां एक और घटना का उल्लेख करना उचित होगा, जब पुणे में महात्मा गांधी अनिश्चितकालीन उपवास पर बैठे थे और उनका स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा था। रविंद्र नाथ टैगोर ने अपने सचिव को उनके पास उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने हेतु भेजा और जब लगा कि गांधी का स्वास्थ्य अत्यधिक खराब है तो वह स्वयं शांति निकेतन से चलकर पुणे आए और गांधी जी को अनशन तोड़ने हेतु कहा। गांधी जी ने उनसे कहा कि वह पहले एक कविता उनको सुनाएं, उसके बाद ही वह अपना अनशन तोड़ेंगे। टैगोर ने उसी समय एक कविता 'एकला चालो रे....' बनाई और सुनाई। उसको सुनने के बाद गांधी जी ने टैगोर के हाथों से संतरे का रस पीकर अपना अनशन समाप्त किया। एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना इन दो महापुरुषों कितनी रही थी, इसका अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है।

टैगोर आयु में गांधी से 8 वर्ष बड़े थे और गांधी से सात वर्ष पहले 1941 में दुनिया से विदा भी हो गए। गांधी को जहां विभाजन की विभीषिका और उसके कारण उत्पन्न हिंसा को देखने का कष्ट झेलना पड़ा था वहीं टैगोर यह देखने से पहले ही दुनिया से चले गए। हां, उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश को अवश्य देखा था। 1915 से 1940 के मध्य गांधी और टैगोर के मध्य हुए पत्राचार को पढ़ना आज की पीढ़ी के लिए उपयुक्त होगा। टैगोर को अपने लेख पर गांधी की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहती थी। दोनों निर्भीकता से एक-दूसरे के विचारो से असहमति ही प्रकट नहीं करते थे बल्कि इस बात का साहस भी रखते थे कि वह उसे सार्वजनिक करें। किसी भी लेख में एक-दूसरे के प्रति किसी प्रकार की व्यक्तिगत कटुता का कोई भाव कभी नहीं देखा गया चाहे विचारों में भिन्नता कितनी ही क्यों न हो?

आज, संवाद के लिए पुनः ऐसा वातावरण बनाने की आवश्यकता है। इस हेतु पहल, जहां समाज के सभी वर्गों को करनी होगी, वहीं शासन की इसमें प्रमुख भूमिका बनती है। किसी दूसरे के विचारों के प्रति सम्मान रखना अपने विचारों को छोड़ना नहीं होता है। सभी पक्षों के विचार सुनने के बाद यह नागरिकों पर छोड़ देना चाहिए कि वह किस विचार को अधिक उपयुक्त मानते हैं? किसी भी विचार को थोपा जाना लोकतंत्र के लिए बड़ा घातक सिद्ध हो सकता है। जिस देश में इस प्रकार की स्वस्थ एवं समृद्ध परंपरा रही हो, वहां पर संकीर्णता का व्यवहार चिंता का विषय है, जिस पर सभी राजनीतिक दलों के नेताओं, समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विचार करने की आवश्यकता है। ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसका संवाद के माध्यम से हल नहीं निकल सकता। केवल करना इतना है, कि हमें परस्पर सम्मान की भावना को नहीं छोड़ना है।

यदि हम आगामी चुनावों के समय इस मूल सिद्धांत की पालना कर सकें कि लोकतंत्र में संवाद का स्थान सर्वोपरि है, तो निश्चित रूप से सार्वजनिक बहस का स्वस्थ रूप देश के सामने आएगा और देश के नागरिकों को अपना निर्णय लेने में अधिक सुविधा होगी।

वर्तमान समय में कई विषय हैं जिन पर सार्वजनिक संवाद की अत्यधिक आवश्यकता है- जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था आदि।

क्या शिक्षा ऐसी हो जो केवल कुछ अभिजात्य वर्ग के लोगों को ही अच्छी शिक्षा के अवसर दे या फिर सभी देशवासियों को अपनी पूर्ण क्षमता विकसित करने का अवसर प्रदान करे ताकि वे न केवल राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें अपितु प्रगति का लाभ उठाकर अपना जीवन स्तर बेहतर करने में भी सक्षम हो सकें?

आर्थिक प्रगति क्या पूर्णतया बाजार आधारित हो जिससे जी डी पी तो तेज गति से बढ़े किन्तु पूँजी का केंद्रीकरण कुछ हाथों में हो या फिर इसकी दिशा समता मूलक समाज का निर्माण करने की हो जिससे सभी नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और वे गरिमापूर्ण जीवन जी सकें? इसी प्रकार, क्या स्वास्थ्य व्यवस्था को निजी क्षेत्र के भरोसे छोड़ देना चाहिए जिसमें प्रमुख भूमिका बीमा कंपनियों और कोर्पोरेट अस्पतालों की हो या सबको गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ करने की जिम्मेदारी सरकार स्वयं निभाए? क्या हम ऐसा समाज चाहते हैं जो बहुमत वाद पर आधारित हो या फिर ऐसा जिसमें विविधताओं को स्वीकार करते हुए सबको फलने-फूलने का अवसर मिले?

ये सब ऐसे विषय हैं, जिन पर कई मत हो सकते हैं। किसी प्रकार का मत रखने वाले को यह भय नहीं होना चाहिए कि उसके मत के कारण उसे सरकार या अन्य किसी समुदाय के कोप का भाजन बनना पड़ेगा। ऐसा वातावरण होगा, तब ही लोग उन्मुक्त हो कर अपनी राय व्यक्त करने के लिए प्रेरित होंगे। संवाद, विषय एवं विचारधारा पर केंद्रित होना चाहिए न कि संबंधित व्यक्ति विशेष पर।

देश, वर्तमान में ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां भयमुक्त वातावरण में संवाद को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ताकि सर्वाधिक उपयुक्त निर्णय लिए जा सकें। यदि आज के नेता, टैगोर और गांधी न भी बन पायें तो उनके उदारवादी परस्पर सम्मान की भावना का अनुसरण तो कर ही सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

नज़र आने लगा है जलवायु परिवर्तन का असर

अविनाश जोशी

जलवायु पारवतन का असर अब धरती से लेकर समुद्र तक स्पष्ट दिखाई देने लगा है। जहां धरती गर्म हो रही है, वहीं समुद्र ठंडा नहीं हो पा रहा है। लिहाजा, मनुष्य समेत अन्य प्राणियों पे इस तापमान वृद्धि का प्रभाव अत्याधिक महसूस हो रहा है। इस गर्मी का सबसे ज्यादा असर अमेरिका और यूरोप में अनुभव किया गया। इसकी वजह मौसम तंत्र का कमजोर होना है, जो ताप को पूरी धरती में बांटता है। एक अन्य अध्ययन से पता चलता है कि दक्षिण एशिया में ठ्ाामीण एवं शहरी निम्न आय परिवारों में समुचित आवासीय व्यवस्था की गुणवत्ता में कमी होने तथा हवा के आवागमन के अभाव के कारण बाहरी तापमान के मुकाबले घरों के भीतर का तापमान ज्यादा हो गया है। असहनीय बढ़ती गर्मी गरीबी और असमानता को और अधिक बढ़ा कर विकास के प्रयासों को कमजोर कर सकती है।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दे के रूप में उभर कर आया है। जलवायु परिवर्तन कोई एक देश या राष्ट्र से संबंधित अवधारणा नहीं है अपितु यह एक वैश्विक अवधारणा है जो समस्त पृथ्वी के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन से भारत सहित पूरी दुनिया में बाढ़, सूखा, कृषि संकट एवं खाद्य सुरक्षा, बीमारियां, आदि का खतरा बढ़ा है। लेकिन चूंकि भारत का एक बड़ा तबका आज भी कृषि पर निर्भर है, इसलिए जलवायु परिवर्तन हमारी कृषि अर्थव्यवस्था पे गहरा प्रभाव डाल सकती है इसलिए हमे कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखना बहुत जरूरी हो जाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व की कृषि अर्थव्यवस्था भी गंभीर मंदी का सामना कर रही है। हालांकि कुछ फसल इससे लाभान्वित भी होंगी किन्तु फसल उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का कुल प्रभाव सकारात्मक से ज्यादा नकारात्मक होगा। भारत में अगले 25 सालो में जलवायु परिवर्तन के कारण लगभग 6 प्रतिशत से 8 प्रतिशत के बीच उत्पादन के गिरने की संभावना है। एक शोध के अनुसार, यदि वातावरण का औसत तापमान 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ता है तो इससे गेहूं का उत्पादन 16 प्रतिशत तक कम हो सकता है। इसी प्रकार 2 डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने से धान के उत्पादन में भी कमी होने के संकेत है।

शहरी इलाकों में गर्मी की समस्या विशेष रूप से चरम पर है, जहां शहरी ऊष्मा का प्रभाव शहरों को उसके आसपास के इलाकों से ज्यादा गर्म बना देता है वही शहरी गर्मी का प्रभाव प्राकृतिक वनस्पतियों के कंक्रीट एवं डामर से प्रभावित होने और वाहनों, उद्योगों एवं एयर कंडीशनरों से अपशिष्ट ऊष्मा के उत्सर्जन के कारण भी हो सकता है। शहरी गर्मी प्रभावित शहर के भीतर थर्मल असमानताएं भी उत्पन्न करती है इससे गरीब एवं वंचित तबका ज्यादा पीड़ित होता है।

जलवायु परिवर्तन से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि जलवायु क्या होती है? सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिये गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है। जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व में भी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो यह इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है।

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तन संख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है।

जलवायु को संतुलित रखने में समुंद्र का बड़ा योगदान रहता है। पृथ्वी के 71 प्रतिशत भाग में समुद्र व्याप्त है, जो कि वातावरण तथा ज़मीन की तुलना में दोगुना सूर्य का प्रकाश का अवशोषण करते हैं। वायुमंडल की अपेक्षा 50 गुना अधिक कार्बन डाइऑक्साइड गैस समुद्र में होती है। समुद्री कि लहरों में बदलाव आने से जलवायु प्रभावित होती है।

नए अनुसंधानों से पता चला है कि पिछले पचास वर्षों में समुद्रों में ऐसे क्षेत्रों का विस्तार हुआ है, जहां आक्सीजन की मात्रा में आशातीत कमी दर्ज की गई है। ऐसी आशंका जताई गई है कि इसका सीधा संबंध वैश्विक जलवायु परिवर्तन से है। दरअसल, समुद्र की एक निश्चित गहराई पर आक्सीजन की मात्रा की न्यूनतम परत होती है। यह परत ऊपर-नीचे दोनों तरफ फैल रही है। आमतौर पर जलवायु परिवर्तन के नमूनों से पता चलता है कि मानवीय क्रियाकलापों के कारण समुद्री सतह गर्म होगी, तो समुद्री पानी के मंथन की स्वाभाविक दिनचर्या प्रभावित होगी। ऐसा होने पर भीतर के पानी में आक्सीजन नहीं पहुंचेगी।

जलवायु परिवर्तन में औद्योगिकीकरण की बड़ी भूमिका है। विभिन्न प्रकार की मिलें वातावरण में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड तथा अनेक प्रकार की अन्य ज़हरीली गैसें और धूलकण हवा में छोड़ती हैं, जो वायुमंडल में काफी वर्षों तक विद्यमान रहती है। यह ग्रीन हाउस प्रभाव, ओज़ोन परत का क्षरण तथा भूमंडलीय तापमान में वृद्धि जैसी समस्याओं का कारण बनते हैं। वायु, जल एवं भूमि प्रदूषण भी औद्योगिकीकरण की ही देन हैं।

निरंतर बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये वृक्ष काटे जा रहे हैं। आवास, खेती, लकड़ी और अन्य वन संसाधनों की चाह में वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जिससे पृथ्वी का हरित क्षेत्र तेजी से घट रहा है और साथ ही जलवायु के परिवर्तन में तेजी आ रही है।

पिछले कुछ दशकों में रासायनिक उर्वरकों की माँग इतनी तेजी से बढ़ी है कि आज विश्व भर में 1000 से भी अधिक प्रकार की कीटनाशी उपलब्ध हैं। जैसे-जैसे इनका उपयोग बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे वायु, जल तथा भूमि में इनकी मात्रा भी बढ़ती जा रही है, जो कि पर्यावरण को निरंतर प्रदूषित कर घातक स्थिति में पहुँचा रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण कीटों और रोगाणुओं में वृद्धि होती है। गर्म जलवायु में कीट-पतंगों की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है जिससे कीटों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है और इसका कृषि पर काफी दुष्प्रभाव पड़ता है। साथ ही कीटों और रोगाणुओं को नियंत्रित करने की कीटनाशकों का प्रयोग भी कहीं ना कहीं कृषि फसल के लिए नुकसानदायक ही होता है।

मौसम में बदलाव का असर समुद्र की सतह पर भी दिखाई देने लगा है। इस असर से समुद्र की पारिस्थितिकी तंत्र के गड़बड़ाने का संकट है। समुद्र की ऐसी तलहटियों में आक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है, जहां पहले से ही आक्सीजन कम है। समुद्री आक्सीजन की गिरावट जारी रही, तो तय है कि ऐसे समुद्री जीवों के मरने का सिलसिला शुरू हो जाएगा, जिन्हें मनुष्य भोजन के रूप में इस्तेमाल करता है। खाद्यान्न की इस कमी के कारण भी समुद्र तटीय इलाकों से लोगों को पलायन करना पड़ेगा, जो पर्यावरण शरणार्थियों की संख्या में इजाफा करेगा। यह स्थिति समुद्री रेगिस्तान का विस्तार भी करेगी।

अतः कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक और भारतीय कृषि व्यवस्था पर वृहद स्तर पर प्रभाव डालता है इस अवस्था में उच्च तकनीकों को अपनाकर कृषि व्यवस्था को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बचाया जा सकता है। ऐसा करना वर्तमान समय की आवश्यकता है अन्यथा भविष्य में इसके घातक परिणाम झेलने पड़ सकते हैं। इसी दिशा में अर्थात भारतीय कृषि को जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल और सक्षम बनाने में भारत सरकार द्वारा किये गए प्रयास भी सराहनीय हैं। इस प्रकार कृषि को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए हमें मिल-जुलकर पर्यावरण को संरक्षित करने के तरीकों को अहमियत देनी होगी ताकि हम अपने प्राकृतिक संसाधनो को बचा सकें और कृषि व्यवस्था को अनुकूल बना सकें।

–अविनाश जोशी,
स्वंतत्र पत्रकार एवं लेखक

विद्यालय की सीढ़ी टूटने से पांच बच्चे घायल, अस्पताल में उपचार जारी

बूंदी, (निसं)। राजकीय भवनों में हो रहे निर्माण कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार के चलते हो रहे घटिया निर्माण सामग्री के उपयोग की भेंट चढ़ने से विद्यालय के बच्चे उस समय बाल-बाल बच गए, जब विद्यालय की पहली मंजिल से उतरते समय सीढ़ियां धराशायी होकर गिर पड़ी।

घटना सोमवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय झाली जी का बराणा की हैं, जहां अवकाश के बाद बच्चे सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। घटना के बाद घायल 1 छात्र सहित पांच छात्र छात्राओं को जिला चिकित्सालय बून्दी में उपचार के लिए भर्ती किया गया हैं। जहां जिला कलक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने पहुंच कर छात्र छात्राओं की कुशलक्षेम पूछी।

कलेक्टर ने अस्पताल पहुंच कर घायल छात्राओं की कुशलक्षेम पूछी।

प्रधानाचार्य निधि छीपा ने बताया कि सोमवार को दोपहर 1 बजे के आसपास अवकाश होने पर 10वीं 11वीं के छात्र-छात्राएं सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, तभी अचानक सीढ़ियां अपने आप ही नीचे आ गिरी। सीढ़ियों के गिरने से उन पर आ रहे लगभग 7-8 छात्र-छात्राएं भी सीढ़ियों की चपेट में आने से घायल हो गए। जिन्हें तुरंत सीएचसी ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद घायल एक छात्र सहित पांच छात्र-छात्राओं को जिला चिकित्सालय बूंदी के लिए एंबुलेंस में रवाना कर दिया। अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य) ओम प्रकाश गोस्वामी ने बताया कि विद्यालय के समीप रहने वाले सेवानिवृत प्रधानाचार्य बजरंग लाल से उक्त घटना की सूचना मिलते ही जिला शिक्षा अधिकारी राजेन्द्र व्यास ने झाली जी का बराणा प्रधानाचार्य से घटना की जानकारी लेकर समसा के सहायक अभियंता अशोक उपाध्याय के साथ तुरंत घटना स्थल के लिए रवाना हो गए। जहां पहुंच कर जिला शिक्षा अधिकारी व्यास ने घटना स्थल का निरीक्षण करते हुए विस्तृत जानकारी ली। घटना की जानकारी मिलने के बाद शाम को जिला कलेक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने जिला अस्पताल पहुंच कर घायल छात्र छात्राओं से जानकारी और उनकी कुशलक्षेम पूछी।

जिला कलेक्टर डॉ. गोस्वामी ने घटना के बाद छात्र छात्राओं की मदद करने वाले घायल छात्र सुरेश सैनी का नाम वीरता पुरस्कार के लिए अभिशंसित करेन की भी बात कही। इन्होंने चिकित्सा और शिक्षा अधिकारियों से चर्चा कर इनकी देखरेख और उचित उपचार के निर्देश दिए। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी राजेन्द्र व्यास और अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. धनराज मधुर भी मौजूद रहे।

रणथंभौर त्रिनेत्र गणेश जी का मुख्य मेला आज

सवाईमाधोपुर, (निसं)। रणथंभौर दुर्ग स्थित त्रिनेत्र गणेश जी का तीन दिवसीय लख्खी मेले का आज सोमवार को श्री गणेश हुआ। महंत बृजकिशोर दाधीच ने मंदिर पर ध्वज चढ़ा कर विधि वित पूजा अर्चना कर मेले का श्री गणेश किया। सोमवार से शुरू हुए इस मेले में लाखों की तादाद में भक्त रंणभवर के लाडले तेरी हो जय जयकार, का गुणगान करते हुए पहुंच रहे हैं अनेक जिलों से पैदल यात्राओं के जत्थे डीजे की धुन पर नाचते हुए पहुंच रहे हैं। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी पर रणथंभौर मंदिर पर लगने वाले इस मुख्य मेले में लगभग 8 से 10 लाख भक्तों के आने की संभावना है। मेले को लेकर जिला प्रशासन एवं मंदिर ट्रस्ट की ओर से लगभग सभी तैयारियां चाक चोबंद है। गणेश मंदिर के महत्व संजय दाधीच ने जानकारी देते हुए बताया कि रणथंभौर दुर्ग में त्रिनेत्र गणेश जी जो अपने पूरे परिवार रिद्धि सिद्धि एवं पुत्र शुभ लाभ सहित विराजमान है।

विधायक कोष से बने सुलभ शौचालय की हो रही दुर्दशा

सांभरझील, (निसं)। विधायक कोष से निर्मित करवाए गए सांभर के पांच बत्ती चौराहे के उत्तर दिशा की तरफ सुलभ शौचालय अब आम उपयोग के लिए दुर्लभ शौचालय बन चुका है।

पुरुष और स्त्रियों के लिए दो खंडों में बने शौचालय के ताला हमेशा ही लटका मिलता है, अब इसका उपयोग मात्र पेशाब घर के रूप में ही हो रहा है। करीब पांच लाख रुपए खर्च होने के बाद भी यहां पर हाथ धोने की सुविधा नहीं है। जल कनेक्शन की कोई व्यवस्था नहीं है। बताया जा रहा है कि कई महीनों से सुलभ शौचालय की न तो कोई धुलाई की गई है और न ही साफ सफाई का कोई इंतजाम दिखाई दे रहा है। सुलभ शौचालय में शराब की बोतलें रखी हुई हैं, इससे भी सहजता से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहां पर साफ सफाई का कितना ख्याल रखा जाता है।

पेशाब घर के तल में गुटके के खाली पाउच पड़े हुए हैं और लोगों की पीक से आधे से ज्यादा लाल हो गया है। यहां पर लगी टाईल्स उखड़ रही है। अंदर लाइट का कोई इंतजाम नहीं है। पृथ्वीराज सर्किल से लेकर तेली दरवाजा तक अन्य और दूसरा कोई सुलभ शौचालय नहीं है जनप्रतिनिधियों की भी इसमें कोई रुचि दिखाई नहीं दे रही है।

इसी प्रकार पृथ्वीराज सर्किल पर भी बने पेशाब घर भी साफ सफाई के अभाव में सड़ रहा है। इनके ऊपर रखी पानी की टंकी आज तक कभी भरी नहीं गई है केवल दिखाने के लिए रख दी गई है। तेली दरवाजा रोड के अंतिम छोर पर

> ■ **लोगों को नहीं मिल रही सुविधाएं, पानी और साफ-सफाई का अभाव**

बने पेशाब घर के हाल तो सबसे ज्यादा खराब है। इसके ऊपर लटका बिजली का ट्रांसफार्मर से भी लोगों को डर बना रहता है। सराय स्कूल की पास से जाने वाले रास्ते पर बना पेशाब घर, पुरानी धान मंडी, पुरानी तहसील, सब्जी मंडी के नजदीक तमाम पेशाब घरों की स्थिति बदतर बनी हुई है। नेता प्रतिपक्ष अनिल कुमार गट्टानी का कहना है कि वाकई में यह तो एक बहुत बड़ी गंभीर समस्या है, बाहर से आने वाली महिलाओं के लिए सुविधा समुचित नहीं है। जिम्मेदार

सांभर के पांच बत्ती चौराहे पर बने सुलभ शौचालय में जमा गंदगी व रखी शराब की बोतलें।

विभाग के लिए यह शर्मसार विषय है कि वे अपनी जिम्मेदारी ढंग से नहीं निभा पा रहे हैं। अनेक दफा हमारी ओर से इसके लिए ध्यान भी आकर्षित करवाया जा चुका है, इसके लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।

राशिफल मंगलवार 19 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, स्वाती नक्षत्र दिन 1:48 तक, वैधृति योग रात्रि 3:57 तक, विष्टि करण दिन 1:44 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 1:48 तक है। कुमार योग दिन 1:48 से आरम्भ होगा। आज भद्रा दिन 1:44 तक रहेगी। आज महागणपति चतुरथी, अगारक चतुरथी, वैधृति पूण्य है। आज सौभाग्य चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:19 से 10:50 तक, लाभ-अमृत 10:50 से 1:51 तक, शुभ 3:22 से 4:53 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:24

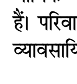

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

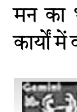

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

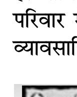

मिथुन

परिवार में शुभ-मांगलिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

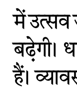

कर्क

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक आयोजन में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

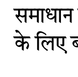

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

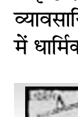

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

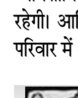

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

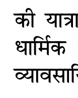

वृश्चिक

धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

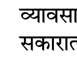

धनु

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

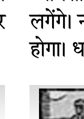

मकर

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

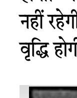

कुंभ

नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

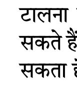

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।